क्या यह बंटवारा सही है?

सुहास कुमार

हमारे सामाजिक ढांचे में स्त्री-पुरुष की भूमिकाएं व काम के क्षेत्र तय से रहते हैं। यही नहीं उनके गुणों को भी काफ़ी हद तक पहले से ही मानकर चला जाता है। स्त्री व पुरुष से कुछ खास गुणों व उन पर आधारित व्यवहार की उम्मीद की जाती है। शुरू से ही उन्हें इन सांचों में ढालने की कोशिश की जाती है।

औरतों के बारे में आमतौर से कहा जाता है कि वे भावना-प्रधान होती हैं। सोच समझकर काम नहीं करतीं। हमेशा हड़बड़ाई सी रहती हैं, उनकी कोई अलग साफ़ सोच नहीं होती। वे नई चीज़ सीखना नहीं चाहतीं। उन्हें आसानी से किसी भी ढांचे में ढाला जा सकता है। वे शिक्षक व ज्ञानी की सत्ता आसानी से स्वीकार कर लेती हैं। उनका राजनीति से कोई लेना देना नहीं है। उन्हें ऐसी घटनाओं में कोई दिलचस्पी नहीं है जो उनकी रोज़मर्रा की ज़रूरतों पर कोई असर नहीं डालतीं। महिलाएं दिमाग के बजाए दिल से सोचती हैं। व्यक्तिगत तौर पर सोचती हैं। भावुक होकर सोचती हैं।

□

स्त्रियोचित गुण	पुरुषोचित गुण
कमज़ोर, डरपोक	बहादुर, हिम्मत वाले
संकुचित विचारों वाली	महत्वाकांक्षी
आज्ञाकारी, दब्बू	आक्रामक, लड़ाकू
विनम्र, बहुत सक्रिय नहीं	क्रियाशील
अधीनता पसंद	शासन करना पसंद
धार्मिक लीक पर चलने वाली	स्वतंत्र, नया रास्ता अपनाने वाले
संवेगशील	तर्क एवं युक्ति पसंद
आत्मविश्वास की कमी	आत्मविश्वासी
लज्जाशील	गुस्ताख
शांतिप्रेमी	युद्धप्रेमी
सही व जल्दी फैसला न कर पाना	सही व जल्दी फैसला करने वाले
बातूनी, गंभीरता की कमी	गंभीर, परिपक्व